

दुआ-32

एतराफ़े गुनाह के सिलसिले में हज़रत (अ0) की दुआ जिसे नमाज़े शब के बाद पढ़ते

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ अल्लाह! ऐ दाएमी व अबदी बादशाही वाले और लश्कर व ऐवना के बग़ैर मज़बूत फ़रमानरवाई वाले और ऐसी इज़्जत व रिफ़अत वाले जो सदियों, सालों, ज़मानों और दिनों के बीतने, गुज़रने के बावजूद पाइन्दा व बरकरार है। तेरी बादशाही ऐसी ग़ालिब है जिसकी इब्तिदा की कोई हद है और न इन्तेहा का कोई आखिरी किनारा है। और तेरी ज़हानदारी का पाया इतना बलन्द है के तमाम चीज़ें उसकी बलन्दी को छूने से कासिर हैं और तारीफ़ करने वालों की इन्तेहाई तारीफ़ तेरी उस बलन्दी के पस्ततरीन दरजे तक भी नहीं पहुंच सकती। जिसे तूने अपने लिये मखासूस किया है। सिफ़तों के कारवाँ तेरे बारे में सरगर्दा हैं। और तौसीफ़ी अलफ़ाज़ तेरे लाएके हाल मदह तक पहुंचने से आजिज़ हैं और नाज़ुक तससव्युरात तेरे मक़ामे किबरियाई में शशदर व हैरान हैं। तू वह खुदाए अज़ली है जो अज़ल ही से ऐसा है और हमेशा बग़ैर ज़वाल के ऐसा ही रहेगा। मैं तेरा वह बन्दा हूँ जिसका अमल कमज़ोर और सरमायाए उम्मीद ज़्यादा है, मेरे हाथ से ताल्लुक व वाबस्तगी के रिफ़ते जाते रहे हैं, मगर वह रिफ़ता जिसे तेरी रहमत ने जोड़ दिया है और उम्मीदों के वसीले भी एक-एक करके टूट गए हैं। मगर तेरे अफ़ो व दरगुज़र का वसीला जिस पर सहारा किये हुए हूँ, तेरी इताअत जिसे किसी षुमार में ला सकूँ, न होने के बराबर है और वह मासियत जिसमें गिरफ़्तार हूँ बहुत ज़्यादा है। तुझे अपने किसी बन्दे को माफ़ कर देना अगरचे वह कितना ही बुरा क्यों न हो, दुश्धार नहीं है। तो फिर मुझे भी माफ़ कर दे। ऐ अल्लाह! तेरा इल्म तमाम पोशीदा आमाल पर मोहीत है और तेरे इल्म व इत्तेलाअ के आगे हर मख़फ़ी चीज़ जाहिर व आशकारा है और बारीक से बारीक चीज़ें भी तेरी नज़र से पोशीदा नहीं हैं और न राज़हाए दरवने पर्दा तुझसे मख़फ़ी हैं तेरा वह दुश्मन जिसने मेरे बे राह्रों होने के सिलसिले में तुझसे मोहलत मांगी और तूने उसे मोहलत दी, और मुझे गुमराह करने के लिये रोज़े क़यामत तक फ़ुरसत तलब की और तूने उसे फ़ुरसत दी, मुझ पर ग़ालिब आ गया है। और जबके मैं हलाक करने वाले सगीरा गुनाहों और तबाह करने वाले कबीरा गुनाहों से तेरे दामन में पनाह लेने के लिये बढ़ रहा था उसने मुझे आ गिराया। और जब मैं गुनाह का मुरतकिब हुआ और अपनी बदआमाली की वजह से तेरी नाराज़ी का मुस्तहक़ बना तो उसने अपने हीला व फ़रेब की बाग़ मुझसे मोड़ ली। और अपने कलमए कुफ़्र के साथ मेरे सामने आ गया और मुझसे बेज़ारी का इज़हार किया और मेरी जानिब से पीठ फिराकर चल दिया और मुझे खुले मैदान में तेरे ग़ज़ब के सामने अकेला छोड़ दिया। और तेरे इन्तेक़ाम की मन्ज़िल में मुझे खींच तान कर ले आया। इस हालत में के न कोई सिफ़ारिश करने वाला था जो तुझसे मेरी सिफ़ारिश करे और न कोई पनाह

देने वाला था जो मुझे तेरे अज़ाब से ढारस दे और न कोई चार दीवारी थी जो मुझे तेरी निगाहों से छिपा सके और न कोई पनाहगाह थी जहां तेरे खौफ से पनाह ले सकूं। अब यह मन्ज़िल मेरे पनाह मांगने और यह मक़ाम मेरे गुनाहों का एतराफ़ करने का, लेहाज़ा ऐसा न हो के तेरे दामने फ़ज़ल (की वुसअर्ते) मेरे लिये तंग हो जाएं और अफ़ो व दरगुज़र मुझ तक पहुंचने ही न पाए और न तौबागुज़ार बन्दों में सब से ज़्यादा नाकाम साबित हूं और न तेरे पास उम्मीदें लेकर आने वालों में सबसे ज़्यादा नाउम्मीद रहूं (बारे इलाहा!) मुझे बख़्श दे इसलिये के तू बख़्शने वालों में सबसे बेहतर है।

ऐ अल्लाह! तूने मुझे (इताअत का) हुक़म दिया मगर मैं उसे बजा न लाया और (बुरे आमाल से) मुझे रोका मगर उनका मुरतक़िब होता रहा। और बुरे खयालात ने जब गुनाह को ख़ुषनुमा करके दिखाया तो (तेरे एहक़ाम में) कोताही की। मैं न रोज़ा रखने की वजह से दिन को गवाह बना सकता हूं। और न नमाज़े शब की वजह से रात को अपनी सिपर बना सकता हूं और न किसी सुन्नत को मैंने ज़िन्दा किया है के उससे तहसीन व सना की तवक्क़ो करूं सिवाए तेरे वाजेबात के के जो उन्हें ज़ाया करे वह बहरहाल हलाक व तबाह होगा और नवाफ़िल के फ़ज़ल व शरफ़ की वजह से भी तुझसे तवस्सुल नहीं कर सकता दरसूरतीके तेरे वाजिबात के बहुत से शराएत से ग़फलत करता रहा और तेरे एहक़ाम के हुदूद से तजावुज़ करता हुआ महारम शरीयत का दामन चाक करता रहा, और कबीरा गुनाहों का मुरतक़ब होता रहा जिनकी रूसवाईयों से सिर्फ़ तेरा दामने अफ़ो व रहमत परदापोश रहा। यह (मेरा मौक़फ़) उस शख़्स का मौक़फ़ है जो तुझसे षर्म व हया करते हुए अपने नफ़्स को बुराईयों से रोकता हो, और उसपर नाराज़ हो और तुझसे राज़ी हो, और तेरे सामने खौफ़ज़दा दिल, खमीदा गर्दन और गुनाहों से बोझल पीठ के साथ उम्मीद व बीम की हालत में इसतादा हो और तू उन सबसे ज़्यादा सज़ावार है जिनसे उसने आस लगाई और उन सबसे ज़्यादा हक़दार है जिनसे वह हरासां व ख़ाएफ़ हुआ।

ऐ मेरे परवरदिगार! जब यही हालत मेरी है तो मुझे भी वह चीज़ मरहमत फ़रमा, जिसका मैं उम्मीदवार हूं। और उस चीज़ से मुतमईन कर जिससे ख़ाएफ़ हूं और अपनी रहमत के इनआम से मुझ पर एहसान फ़रमा। इसलिये के तू उन तमाम लोगों से जिनसे सवाल किया जाता है ज़्यादा सखी व करीम है।

ऐ अल्लाह जबके तूने मुझे अपने दामने अफ़ो में छिपा लिया है और हमसरो के सामने इस दारे फ़ना में फ़ज़ल व करम का जामा पहनाया है। तो दारे बक्रा की रूसवाईयों से भी पनाह दे। इस मक़ाम पर के जहां मुकर्रब फ़रिशते, मोअज़िज़ व बावेक्रार पैग़म्बर, षहीद व सालेह अफ़राद सब हाज़िर होंगे, कुछ तो हमसाये होंगे जिनसे मैं अपनी बुराईयों को छिपाता रहा हूं, और कुछ खवीश

व अकारिब होंगे जिनसे मैं अपने पोशीदा कामों में शर्म व हया करता रहा हूँ। ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी परदापोशी में उन पर भरोसा नहीं किया और मगफ़ेरत के बारे में परवरदिगारा तुझ पर एतमाद किया है और तू उन तमाम लोगों से जिन पर एतमाद किया जाता है। ज़्यादा सज़ावार एतमाद है और उन सबसे ज़्यादा अता करने वाला है जिनकी तरफ़ रूजू हो जाता है और उन सबसे ज़्यादा मेहरबान है जिनसे रहम की इल्तेजा की जाती है। लेहाज़ा मुझ पर रहम फ़रमा।

ऐ अल्लाह तूने मुझे बाहम पोशीदा हड्डियों और तंग राहों वाली सल्ब से तंग नाए रहम में के जिसे तूने पर्दों में छिपा रखा है एक ज़लील पानी (नुत्फ़े) की सूरत में उतारा जहां तू मुझे एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ मुन्तक़िल करता रहा यहां तक के तूने मुझे इस हद तक पहुंचा दिया। जहां मेरी सूरत की तकमील हो गयी। फिर मुझमें आज़ाए व जवारेह व दीअत किये। जैसा के तूने अपनी किताब में जिक्र किया है। के (मैं) पहले नुत्फ़ा था। फिर मुन्जमिद खून हुआ फिर गोशत का एक लोथड़ा, फिर हड्डियों का एक ढांचा फिर उन हड्डियों पर गोशत की तहें चढा दीं। फिर जैसा तूने चाहा एक दूसरी तरह की मखलूक बना दिया और जब मैं तेरी रोज़ी का मोहताज हुआ और लुत्फ़ व एहसान की दस्तगीरी से बेनियाज़ न रह सका, तो तूने उस बचे हुए खाने पानी में से जिसे तूने उस कनीज़ के लिये जारी किया था जिसके शिकम में तूने मुझे ठहरा दिया और जिसके रहम में मुझे वदीअत किया था। मेरी रोज़ी का सरो सामान कर दिया। ऐ मेरे परवरदिगार उन हालात में अगर तू खुद मेरी तदबीर पर मुझे छोड़ देता या मेरी ही कूवत के हवाले कर देता तो तदबीर मुझसे किनाराकश और कूवतम मुझसे देर रहती, मगर तूने अपने फ़ज़ल व एहसान से एक शफ़ीक़ व मेहरबान की तरह मेरी परवरिश का एहतेमाम किया जिसका तेरे फ़ज़ले बेपायां की बदौलत इस वक़्त तक सिलसिला जारी है के न तेरे हुस्ने सुलूक से कभी महरूम रहा और न तेरे एहसानात में कभी ताखीर हुई। लेकिन इसके बावजूद यकीन व एतमाद कवी न हुआ के मैं सिर्फ़ उसी काम के लिये वक़फ़ हो जाता जो तेरे नज़दीक मेरे लिये ज़्यादा सूदमन्द है (इस बेयकीनी का सबब यह है के) बदगुमानी और कमज़ोरी यकीन के सिलसिले में मेरी बाग़ शैतान के हाथ में है। इसलिये मैं उसकी बद हमासायगी और अपने नफ़स की फ़रमाबरदारी का शिकवा करता हूँ और उसके तसल्लुत से तेरे दामन में तहफ़फ़ुज व निगेहदाशत का तालिब हूँ और तुझसे आजिज़ी के साथ इल्तिजा करता हूँ के इसके मक़ व फ़रेब का रूख़ मुझसे मोड़ दे और तुझसे सवाल करता हूँ के मेरी रोज़ी की आसान सबील पैदा कर दे। तेरे ही लिये हम्द व सताइश है के तूने अज़ख़ुद बलन्दपाया नेमतेँ अता कीं और एहसान व इनआम पर (दिल में) शुक्र का अलका किया। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे लिये रोज़ी को सहल व आसान कर दे और जो अन्दाज़ा मेरे लिये मुकर्रर किया है, उस पर कनाअत की तौफ़ीक़ दे और जो हिस्सा मेरे लिये मुअय्यन किया है उस पर मुझे

राज़ी कर दे और जो जिस्म काम में आ चुका और जो उम्र गुज़र चुकी है उसे अपनी इताअत की राह में महसूब फ़रमा, बिलाशुबह तू असबाबे रिज़क मुहय्या करने वालों में सबसे बेहतरीन है, बारे इलाहा मैं उस आग से पनाह मांगता हूँ जिसके ज़रिये तूने अपने नाफ़रमानों की सख़्त गिरफ्त की है और जिससे तूने उन लोगों को जिन्होंने तेरी रज़ा व खुशनूदी से रूख मोड़ लिया, डराया और धमकाया है और उस आतिशे जहन्नम से पनाह मांगता हूँ जिसमें रोशनी के बजाए अन्धेरा जिसका खफ़ीफ़ लपका भी इन्तेहाई तकलीफ़देह और जो कोसों दूर होने के बावजूद (गर्मी व तपिश के लिहाज़ से) करीब है और उस आग से पनाह मांगता हूँ जो आपस में एक दूसरे को खा लेती है और एक दूसरे पर हमलावर होती है और उस आग से पनाह मांगता हूँ जो हड्डियों को खाकसर कर देगी और दोज़खियों को खौलता हुआ पानी पिलाएगी। और उस आग से के जो उसके आगे गिड़गिड़ाएगा, उस पर तरस नहीं खाएगी और जो उससे रहम की इल्तेजा करेगा, उस पर रहम नहीं करेगी और जो उसके सामने फ़रवतनी करेगा और खुदको उसके हवाले कर देगा उस पर किसी तरह की तख़फ़ीफ़ का उसे इख़तेयार नहीं होगा। वह दर्दनाक अज़ाब और शदीद एकाब की शोला सामानियों के साथ अपने रहने वालों का सामान करेगी। (बारे इलाहा!) मैं तुझसे पनाह मांगता हूँ जहन्नम के बिच्छुओं से जिनके मुंह खुले होंगे और उन सांपों से जो दांतों को पीस पीस कर फुंकार रहे होंगे और उसके खौलते हुए पानी से जो अन्तड़ियों और दिलों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और (सीनों को चीरकर) दिलों को निकाल लेगा।

खुदाया! मैं तुझसे तौफ़ीक़ मांगता हूँ उन बातों की जो उस आग से दूर करें, और उसे पीछे हटा दें, खुदावन्दा! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपनी रहमते फ़रावां के ज़रिये उस आग से पनाह दे और हुस्ने दरगुज़र से काम लेते हुए मेरी लग्ज़िशों को माफ़ कर दे और मुझे महरूम व नाकाम न कर। ऐ पनाह देने वालों में सबसे बेहतर पनाह देने वाले। खुदाया तू सख़्ती व मुसीबत से बचाता और अच्छी नेमतें अता करता और जो चाहे वह करता है और तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

ऐ अल्लाह! जब भी नेकोकारों का ज़िक्र आए तो मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जब तक शब व रोज़ के आने जाने का सिलसिला कायम रहे। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐसी रहमत जिसका ज़खीरा खत्म न हो और जिसकी गिनती शुमार न हो सके। ऐसी रहमत जो फ़िज़ाए आलम को पुर कर दे और ज़मीन व आसमान को भर दे। खुदा उन पर रहमत नाज़िल करे इस हद तक के वह खुशनूद हो जाए और खुशनूदी के बाद भी उन पर और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल करता रहे। ऐसी रहमत जिसकी न कोई हद हो और न कोई इन्तेहा, ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।